

योग दर्शन का वैश्विक प्रभाव एवं वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा Global Impact of Yoga Philosophy and Concept of Vasudhaiva Kutumbkam

रणधीर सिंह राठौड़¹ एवं अनुज कुमारी²

Randhir Singh Rathore¹ and Anuj Kumari²

^{1,2}Shri Vishwakarma Skill University, Palwal, Haryana

¹rsr.svsu@gmail.com, ²jwalitjhakar@gmail.com

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18518553>

सारांश

“वसुधैव कुटुम्बकम” (“सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है”) यह एक ऐसा आदर्श वाक्य है जो भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की अद्वितीयता को दर्शाता है। यह भारतीय प्राचीन उपनिषदों के ग्रंथ “महोपनिषद्” में वर्णित दार्शनिक विचार है। महर्षि पतंजलि के योग दर्शन के अनुसार “मानव जाति के उद्गम का स्रोत एक ही है, जो स्वतंत्र और शुद्ध चेतना के रूप में वर्णित है” जिससे एकता की समझ और सभी मनुष्यों के परस्पर संबंध की भावना उदित होती है, जैसा कि सम्पूर्ण मानवता एक ही जीवनी शक्ति से संचालित है। महर्षि पतंजलि के अनुसार मनुष्य का मूल स्वरूप, मन के नकारात्मक उतार-चढ़ाव और कलशों से आच्छादित है और योग मन के इन नकारात्मक उतार-चढ़ाव को रोकने और सार्वभौमिक आत्मा के साथ एकता प्राप्त करने के लिए अपनी मूल प्रकृति में व्यक्तिगत आत्मा को पुनर्स्थापित करने के लिए है। जीवन ऊर्जा या ब्रह्मांडीय ऊर्जा का यह एकल दिव्य स्रोत “वसुधैव कुटुम्बकम” का आधार है।

Abstract

“Vasudhaiva Kutumbakam” (“The whole world is one family”) is a motto that reflects the uniqueness of India’s ancient civilization and culture. It is a philosophical idea described in the ancient Indian Upanishads, “Mahopanishad”. According to the Yoga philosophy of Maharishi Patanjali: “The source of origin of mankind is one, which is described as independent and pure consciousness” from which arises an understanding of the unity and interconnectedness of all human beings, as all of humanity is driven by a single life-force. According to Maharishi Patanjali the original nature of man is covered with negative fluctuations and passions of the mind and Yoga is meant to stop these negative fluctuations of the mind and restore the individual soul to its original nature to attain unity with the universal soul. This single divine source of life energy or cosmic energy is the basis of “Vasudhaiva Kutumbakam”.

मुख्य शब्द: वसुधैव कुटुम्बकम, वैश्वीकृत दुनिया, सार्वभौमिक परिवार, योग दर्शन, परस्पर संबद्धता, सामाजिक सद्भाव, ब्रह्मांडीय एकता।

Key Words: Vasudhaiva Kutumbakam, Globalized World, Universal Family, Yoga Philosophy, Interconnectedness, Social Harmony, Cosmic Unity.

परिचय

वैदिक ग्रंथ 'महोपनिषद्' में "वसुधैव कुटुम्बकम्" का विचार अध्याय 6, श्लोक 72 में वर्णित है। प्राचीन भारतीय दर्शन ("वसुधैव कुटुम्बकम् : संपूर्ण विश्व एक परिवार है") राष्ट्रीय, धार्मिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार कर विश्व को एक परिवार मानता है।^[4] एकता के सार्वभौमिक विचार के माध्यम से यह अवधारणा आज के आधुनिक समय में सभी प्राणियों के बीच करुणा और एकता को बढ़ावा देती है।^[3] इस विचार को अपनाने से आज सम्पूर्ण मानव जाति को अपने स्वयं के साथ, एक दूसरे के साथ, और प्रकृति के साथ, सद्भाव को बढ़ावा देकर सहानुभूति और करुणा के साथ अधिक जिम्मेदारी से जीने की प्रेरणा मिलती है।^[1]

परस्पर जुड़ाव: वैश्विक नागरिक

एक व्यक्ति जो धर्म, जाति, लिंग, पंथ, समाज या देश के बीच कोई भेद या किसी भी पूर्व धारणा को नहीं मानता, और पृथ्वी पर हर मानव जीवन को अपना बंधुमान, प्रकृति द्वारा प्रदान की जाने वाली हर चीज को साझा करने के लिए तैयार है, वह एक विश्व नागरिक है।

पतंजलि के योग सूत्र व्यक्ति और सार्वभौमिक चेतना के बीच संबंध को दर्शाते हैं। मानव का, पर्यावरण और ब्रह्मांड के साथ परस्पर संबंध "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अंतर्दृष्टि को दर्शाता है। मनुष्य की मूल प्रकृति मन के उतार-चढ़ाव और कलेशों से आच्छादित है (अज्ञान, अहंकार, आसक्ति, द्वेष और मृत्यु का भय)। महर्षि पतंजलि के अनुसार योग मन के इन नकारात्मक उतार-चढ़ावों को रोकने का साधन है (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः1/2) जो व्यक्तिगत आत्मा को उसकी मूल प्रकृति शुद्ध चेतना में पुनः स्थापित कर (तदा, द्रष्टुः, स्वरूपे, अवस्थानम्1/3), सार्वभौमिक आत्मा के साथ जोड़कर एक विशेष देश का नहीं परंतु सम्पूर्ण विश्व का नागरिक बनाता है।

योग दर्शन का मानना है कि सम्पूर्ण संसार, प्रकृति और स्वयं (पुरुष) के बीच परस्पर क्रिया का परिणाम है। पुरुष (आत्मा), सम्पूर्ण मानवता की चेतना का एकमात्र स्रोत है। पुरुष और प्रकृति के बीच दिव्य संबंध को पहचानकर, मानव अहंकार से ऊपर उठ सकते हैं, आसक्ति पर काबू पा सकते हैं और अपने उच्च उद्देश्य के साथ जुड़ सकते हैं। शिक्षाएँ पुरुष और प्रकृति के बीच

इस दिव्य संबंध के व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर भी जोर देती हैं, जैसे कि मन को वश में करना, ज्ञान के साथ बुद्धि को परिष्कृत करना और अनासक्ति को अपनाना। यह जागरूकता विनम्रता, समता (समत्व) और अहिंसा को बढ़ावा देती है। जब पुरुष और प्रकृति के बीच दिव्य संबंध को पूरी तरह से समझ लिया जाता है, तो यह न केवल दुनिया को देखने के हमारे नज़रिए को बदलता है, बल्कि स्वयं की अज्ञानता, पूर्वाग्रह और भेदभाव (जाति, शरीर, धर्म या देश) को दूर कर मन को स्थिर और शांत कर, सकारात्मक रूप से ब्रह्मांड के साथ स्थिरता प्राप्त करने की प्रेरणा भी देता है।

पतंजलि योग दर्शन के अनुसार "योग व्यक्तिगत आत्मा की वास्तविक मूल प्रकृति को प्राप्त करना है" (तदा, द्रष्टुः, स्वरूपे, अवस्थानम्1/3)

महर्षि पतंजलि का योग दर्शन आध्यात्मिक विकास के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है, और व्यक्तिगत आत्मा को उसकी मूल प्रकृति में स्थापित करके सभी मानसिक उतार-चढ़ाव और अज्ञानता को रोककर मानसिक स्पष्टता और स्थिरता के माध्यम से आंतरिक शांति प्रदान करता है जो बड़े पैमाने पर बाहरी शांति, प्रेम, खुशी और ज्ञान की ओर ले जाता है।

यम, नियम और वसुधैव कुटुम्बकम्

योग दर्शन योग के आठ अंगों के अभ्यास के माध्यम से व्यक्तिगत विकास और आंतरिक शांति पर जोर देता है। अष्टांग योग के आठ अंगों में से पहले दो अंग, यम और नियम, लोगों और समाज को व्यक्तिगत विकास के लिए अधिक सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण रहने की प्रेरणा देते हैं।

पहला अंग 'यम' (सामाजिक/बाहरी नैतिकता) है जो नैतिक व्यवहार (अहिंसा, सच्चाई और चोरी न करना, दूसरों के साथ सकारात्मक बातचीत) को उजागर करके दूसरों के साथ रचनात्मक संबंधों को बढ़ावा देते हैं। दूसरा अंग 'नियम' (आंतरिक नैतिकता) है जो आत्म-नियंत्रण, संतोष और शुद्धि पर जोर देती है। ये आत्म-जागरूकता और सद्भाव बढ़ाते हैं, जो सभी लोगों की दिव्यता और परस्पर संबंध को स्थापित करता है। इसी तरह, "वसुधैव कुटुम्बकम्" हमें समाज के साथ सद्भाव में रहने और दूसरों के प्रति करुणा दिखाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

यम, सामाजिक संयम के नियम हैं	नियम (स्वयं का पालन, व्यक्तिगत नियम)
अहिंसा	शौच
सत्य	संतोष
असत्य	तप
ब्रह्मचर्य और	स्वाध्याय
अपरिग्रह	और इश्वर प्रणिधान

चित्र 1. यम और नियम

संतुलित जीवन: योग दर्शन अहिंसा पर जोर देता है जो स्थायी जीवन की ओर जाता है और जीवन जीने के एक ऐसे तरीके को बढ़ावा देता है जो पर्यावरण और अन्य जीवित प्राणियों को नुकसान पहुंचाने से रोकता है। योग सूत्र 2.35, "अहिंसा प्रतिष्ठां तत् सन्निधौ वैर त्यागः"। यह सूत्र हमें बताता है कि अहिंसा में स्थित व्यक्ति की संगति में, शत्रुता समाप्त हो जाती है। अहिंसा में स्थित व्यक्ति की संगति में द्वेष मिट जाता है और उनकी उपस्थिति शांति और अहिंसा की भावना पैदा करती है, जो बदले में उनके आसपास के लोगों की भावनाओं को प्रभावित करती है। अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति श्रद्धा का एक आंतरिक दृष्टिकोण है जो हिंसा को पनपने की अनुमति नहीं देता है। पारिस्थितिक संतुलन की आवश्यकता को इस दृष्टिकोण में उजागर किया गया है, जो सार्वभौमिक नैतिकता के अनुरूप है।

संघर्ष पर काबू पाना : योग दर्शन के यम और नियम सिद्धांत, जो एक सार्वभौमिक परिवार की धारणा को दर्शाते हैं, एक समावेशी और स्वीकार्य मानसिकता को बढ़ावा देते हैं। यह विभिन्न समूहों, संस्कृतियों और देशों के बीच विभाजन को समाप्त कर आपसी समझ और शांति को बढ़ावा देते हैं। आध्यात्मिक विकास और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए, योग दर्शन नैतिक व्यवहार, शारीरिक अनुशासन, सांस नियंत्रण और ध्यान के एकीकरण को प्रोत्साहित करता है। जीने का यह तरीका स्वयं, अन्य लोगों और पर्यावरण के साथ एकता को बढ़ावा देता है, जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" के विचार के अनुरूप है।

वसुधैव कुटुम्बकम् के मूल सूत्र

मनुष्य आभासी दुनिया में एक वेब में जुड़े हुए हैं लेकिन वास्तविक दुनिया में स्वयं द्वारा बनाई गई सीमाओं के कारण पृथक हो गए हैं। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जो इस आभासी दुनिया से ले सकते हैं जहां हम सभी वैश्विक नागरिक हैं। अगर हम स्व-निर्मित पिंजरे के बाहर सुंदर दुनिया को देखने के लिए जेल से बाहर आना चाहते हैं, तो हमें पिंजरे के ऐसे सभी द्वारों से पार पाना होगा।

हालांकि आभासी दुनिया में हमने इस मुक्ति का अनुभव किया है, और हम कुछ अदृश्य तरंगों जो हमारे मोबाइल/कंप्यूटर को जोड़ती हैं उनके माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व को जाने बिना इतने सारे लोगों से जुड़े हुए हैं लेकिन वास्तविक दुनिया में हम अभी भी स्व-निर्मित बैरिकेड्स/आड को हटाने की कुंजी खोजने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

ऐसी ही एक कुंजी है "ब्रह्मविहार" यानी मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा का अभ्यास। ये चार प्राथमिक गुण ही कुंजी हैं। सूत्र 1.33 में पतंजलि ने अपने भीतर शांति और स्थिरता प्राप्त करने के लिए रिश्तों के भीतर चार आवश्यक दृष्टिकोणों को निर्धारित किया है।

मैत्रिकुरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःख पुण्यपुण्यविषयानं भावनातश्चित्प्रसादनम् 1/33

मैत्री= मित्रता	करुणा= दया	मुदिता= शुद्ध आनंद या खुशी	उपेक्षानम्=उदासीनता
पुण्य' और 'सुख' के प्रति	दुखी' और 'अपुण्य' लोगों के प्रति	'पुण्य' या सकारात्मक लोगों के प्रति	अपुण्य' या ऐसे लोगों के प्रति

चित्र 2. ब्रह्मविहार

1. मैत्री: सार्वभौमिक मित्रता की ऊर्जा
सभी प्राणी सुखी रहें।
2. करुणा: सहानुभूति की ऊर्जा
सभी प्राणी दुख से मुक्त हों।
3. मुदिता: साझा खुशी की ऊर्जा
सभी प्राणी दूसरों की खुशी में आनन्दित हों।
4. अपेक्षा: आंतरिक संतुलन की ऊर्जा
सभी परिवर्तनों के बीच अविचलित हों।

महर्षि पतंजलि के अनुसार हमारे पास अपने दृष्टिकोण का चयन करने की क्षमता है। वे एक ऐसे समुदाय को बढ़ावा देते हैं जो हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है और हमारे दिलों को खोलता है, जिससे दुनिया अंदर के साथ-साथ बाहर भी अधिक मेहमाननवाज हो जाती है। यह वातावरण हमारे भीतर स्पष्टता और आंतरिक शांति का परिणाम है। ये गुण आत्म-सुधार के जीवन का समर्थन करते हैं जो संसार को सभी के लिए एक बेहतर जगह बनाते हैं। ये इस भौतिक दुनिया में सभी आत्माओं से जुड़ने के लिए लॉगिन क्रेडेंशियल हैं। यह तब प्राप्त किया जा सकता है जब हम यह अनुभव करें कि जिस सामान्य वाई-फाई के माध्यम से हम सभी परम ऊर्जा से जुड़े हैं, वह “प्राणवायु” व “जीवन शक्ति” है। योग दर्शन के अनुसार, “जो अपने सच्चे सार में बसता है, वह अपनी उच्चतम क्षमता या ब्रह्मांडीय सर्वोच्च शक्ति को प्राप्त करने के लिए नकारात्मकता की सभी सीमाओं को तोड़ने की शक्ति रखता है।”

निष्कर्ष

महर्षि पतंजलि का योग दर्शन आध्यात्मिक विकास के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है, और व्यक्तिगत आत्मा को उसकी मूल प्रकृति में स्थापित करके सभी मानसिक उतार-चढ़ाव और अज्ञानता को रोककर मानसिक स्पष्टता और स्थिरता के माध्यम से आंतरिक शांति प्रदान करता है जो बड़े पैमाने पर बाहरी शांति, प्रेम, खुशी और ज्ञान की ओर ले जाता है। पतंजलि योग दर्शन भी “वसुधैव कुटुम्बकम्” (एक परिवार के रूप में ब्रह्मांड) के विचार का पोषण करता है, जो हमारी अन्योन्याश्रयता को पहचानना और इस तरह से व्यवहार करना है जो सद्भाव, प्रेम, शांति और सभी की भलाई को बढ़ावा देता है। योग दर्शन की शिक्षाओं पर विचार करके, यह लेख इस बात पर जोर देता है कि यह विचार आधुनिक युग में कितना लागू है और यह हमारे वैश्वीकृत समाज में सामाजिक सद्भाव, पर्यावरणीय नैतिकता, सहानुभूति और करुणा को कैसे बढ़ावा दे सकता है। वसुधैव कुटुम्बकम् समाज की एक अवधारणा है जो आध्यात्मिक अनुभूति से उपजी है कि सभी लोग एक ही जीवन शक्ति से बने हैं।

शोधपत्र में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की समानार्थक हिंदी शब्दावली

Alphabetically Sorted Terminology in English	वर्णमाला अनुक्रमित समानार्थक हिंदी शब्दावली
Cosmic Unity	ब्रह्मांडीय एकता
Globalized World	वैश्वीकृत दुनिया
Interconnectedness	परस्पर सम्बद्धता
Social Harmony	सामाजिक सद्भाव
Universal Family	सार्वभौमिक परिवार
Yoga Philosophy	योग दर्शन

संदर्भ

- Aseri G.K., and Jain N. (2023). 'Vasudhaiva Kutumbakam' and 'One Health' approach to combat global AMR. IP International Journal of Medical Microbiology and Tropical Diseases, 9 (3), 135-138.
- Hattangadi Sundar (2000). "Mahopinashat (Maha Upanishad), 20 January 2016.
- Khandekar A. (2016). Vasudhaiva Kutumbakam: Family in the Knowledge Economy. Domesticity in the Making of Modern Science, 259-278.
- Kumar A., Badasahi, K., and Kumar Kar A. (2023). The Concept of Vasudhaiva Kutumbakam (The World is One Family): Insights from the Maha Upanishad.
- Patanjali Yoga Darshan, Publisher: Gita Press Gorakhpur; Latest edition (1 January 2013); Gita Press Gorakhpur, page 144.
- Raina S.K., and Kumar R., Vasudhaiva Kutumbakam-One Earth, One Family, One Future: "India's mantra for a healthy and prosperous Earth as G20 leader J Family Made Prime Care 20231221913.
- Robin Seelan (2015). Deconstructing Global Citizenship (Editors: Hasan Bashir and Phillips Gray), Routledge.
- Shah S. and Ramamurthy V. (2014), Soulful Corporation, Spinger Science.
- Sheridan Daniel (1986). The Advaita Theism of the Bhagavata Purana. Columbia: South Asia Books.
- Tan, Chung (1 January 2015). Himalaya Calling. World Scientific.
- Tinoco, Carlos Alberto (1996). The Upanishads. IBRASAA. ISBN 978-85-348-0040-2.

